प्रभाकर पाण्डेय _____

जन्मतिथि : ०१-०१-१९७६
जन्म-स्थान : गोपालपुर, पथरदेवा, देवरिया (उत्तरप्रदेश)
शिक्षा : एम.ए (हिन्दी), एम.ए. (भाषाविज्ञान)

पिछला सात-आठ साल से हिन्दी के सेवा में लागल । एह समय एक शोध सहायक (Research Associate) के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.) मुम्बई के संगणक एवं अभियांत्रिकी विभाग में प्रा० पुष्पक भट्टाचार्य के सानिध्य एवं मार्गदर्शन में भाषा के क्षेत्र में लागल। कई गो शोध-प्रपत्र राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रस्तुत। प्रयोगशाला के कड़ी: http://www.cfilt.iitb.ac.in/
सम्पर्क: prabhakargopalpuriya@gmail.com

रासिफल जिए ना दी (व्यंग्य)

सबेरे-सबेरे हम अखबार खोलते आपन रासिफल देखेनी अउर ओही आधार पर दिन के सुरुवात करेनी। खाली हमहीं नाहीं, हमार मलिकाइनो टीवी खोलते पहिले उहे चैनल देखेली जहँवा रासिफल आवत होखे। अरे भाई, उनकरा तऽ इ मालूम बा कि कब कवन-कवन चैनल रासिफल देखावेला। अइसन बात नइखे कि उनकरा राशिफल देखल बहुते अच्छा लागेला। उ तऽ खाली

हमार रासिफल देखेली, आपन ना। रासिफल देखला के बाद सीधे आउर साफ तौर पर हमके हिदायत देली कि आज के दिन कइसे हमरा काटे के बा।

बहुत दिन बाद आज जब हमार इयार बहोरन अइले ह त हम कहनी कि ए इयार! हम त रासिफल से परेशान हो गइल बानी। का करीं? कुछ समझे में नइखे आवत। इयार कहले कि तू मरदवा एतना होसियार होके भी रासिफल पर बिसवास करेलऽ? इनकर बात सुन के हम कहनी कि दूर मरदे! हम ना करब त के करी? पंडित जे ठहरनीं। हम कबो ना चाहब कि रासिफल पर से लोग के बिसवास उठ जाय। अरे भाई केतने पंडितन के रोजी-रोटी के सवाल बा।

"अरे इयार, जब से इ रासिफल देखे के हम सवख पलनी, जिनगी में भूकंप आ गइल।"

'उ काँहे?' हमार इयार पूछले।

हम कहनी - "काल्हिए के त बात हऽ। अखबार खोल के जब आपन रासिफल देखत रहनी त ओमे साफ-साफ लिखल रहे कि आज वाहन के सुख लिखता। जतरा के आनंद मिली। दिन बहुते सुख से कटी।"

इयार पूछले - 'तब?'

अभी हम कहलहीं रहनी कि 'का तब?' तलेक हमार मलिकाइन आ गइली आ कहली 'आज रउआ कहीं घर से बाहर नइखे निकलले के।'

हम पूछ बइठनी - काँहे? जबाब मिलल -'राउर आज के रासिफल ठीक नइखे। अबे टीवी में देखनी ह। टीवी के पंडिताइनजी बतावत रहली ह कि आज रउरा के जतरा में कस्ट लिखता। वाहन दुर्घटना होई।'

हम उनके अखबार देखवनी अउर कहनी कि हेमे देखबु का लिखल बा? त उ पील परली - 'अखबारे में गलती-सलती लिखे ले सन कुल। टीबी में के एकदम सही होला। आज कुछु हो जाव, पर रउआ घर से बाहर नइखे निकले के।' हम आपन कपार पकड़ के बइठ गइनी।

इ त रहे काल्ह के बात अब आज के सुनऽ। आज फजीरे-फजीरे मलिकाइन जब चाय ले के अइली तऽ बहुते मुस्कियात रहली। हम पूछनी कि का बात बा? लड्डू फूटता। त कहली - 'आज रउरी रासिफल में बा कि परिवार की साथे घूमे गइल ठीक रही। कहीं होटल-ओटल में खाना खाईं, अउर पूरा दिन परिवार की साथे बिताईं।'

अब तू बतावऽ कि हम का करीं? एह रासिफल के वजह से हमरा महीना में सात-आठ दिन घर से बाहर परिवार के साथे बितावे के परेला आ रेस्टोरेंट के बिल चुकावे के परेला। अब तऽ बॉस के धमकी भी मिल रहल बा। हम अगर एहींगा छुट्टी लेत रहनी तऽ बहुत जल्दिए काम से हाथ धोवे के परी।

हमार बात सुन के हमार इयार कहले - 'अब का कइल जा सकेला ? तू ठहरल पंडित। रासिफल अउर जोतिसाचार्य के अपमान कर ना सकेलऽ। अउर भउजी रासिफल देखल छोड़ ना सकेली। एही बहाने उनका बहार बा। भले तोहरा खातिर जंजाल बा।'

बात बढ़ावत हमार इयार कहले "तहरा राशि फल के चक्कर में हम अपने काम भुला गइल रहनी ह। एगो काम करऽ - जवन हमर उधार बा तोहरी पर उ दू हजार वापस दे दऽ। हमरा एगो जरूरी काम बा। पइसा के बहुते दरकार बा।"

"हम त तोहरा से आज खुदे एक हजार करजा माँगे आवे के रहनी हँ तवले तूहीं आ गइलऽ हऽ। अउरी हाँ, आज हमरी मलिकाइन के अनुसार, नाहीं भाई रासिफल के अनुसार लेन-देन कइल ठीक ना रही।"

हमार इ बात सुन के हमार इयार पुंछ पर खड़ा हो गइले आ "ठीक बा आज के बाद हमहुँ रासिफल देखला के बादे तोहके करजा देब" क़हत खिसियात दलान से बाहर हो गइले।

हम आपन कपार खजुआवत रह गइनी आ मलिकाइन देहरी के भीतर मुसकीयात रहली - "जय हो रासिफल!"

_____ooo_____